

भारतीय ज्ञान परम्परा और नई शिक्षा नीति

डॉक्टर सीमा रानी

सहायक प्राध्यापक

हिंदी विभाग

श्री लालनाथ हिंदू महाविद्यालय रोहतक

(Received-15 July 2026/Revised-28July2026/Accepted-5 August2026/Published-15August2026)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा भारतीय ज्ञान परम्परा दोनों ही एक व्यापक फलक पर जुड़े हुए हैं, जो आधुनिक भारत, उसकी सफलताओं और चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और उसके योगदानों की चर्चा करता है। यह नीति बहुविषयक शिक्षा प्रणाली की वकालत करती है, जो भारतीय ज्ञान परम्परा के समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण के अनुरूप है। यह शिक्षा नीति सीखने के पारम्परिक तरीकों को समाहित करने की सिफारिश करती है तथा साथ ही साथ यह गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा शास्त्र, कृषि, साहित्य, खेल के साथ-साथ शासन-प्रशासन एवं राज्य व्यवस्था आदि विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए हुए है। यह नीति रचनात्मकता, नवाचार, आलोचनात्मक चिंतन और उच्च स्तरीय चिंतन की क्षमता, समस्या समाधान योग्यता, कौशल विकास, दक्षता, संप्रेषण कौशल, सीखने में गहराई, पाठ्यक्रम के सभी विषयों पर पकड़, सामाजिक मूल्यों और नैतिकता के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देती हैं जिससे सकारात्मक शैक्षणिक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं तथा साथ ही समग्र बहुविषयक शिक्षा दृष्टिकोण से अनुसंधान के क्षेत्र में सुधार और बढ़ोतरी दिख रही हैं

“भारतीय ज्ञान परम्परा कोई स्थिर या एकल इकाई नहीं है, बल्कि यह सदियों से विकसित ज्ञान, दर्शन, विज्ञान, कला और जीवन मूल्यों का एक विशाल और जीवंत भंडार है।” (1)

यह ज्ञान प्रणाली न केवल तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करती है, अपितु ज्ञान प्राप्त करने के विशिष्ट तरीके, नैतिक मूल्यों और जीवन के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण को भी समाहित करती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जो काफी हद तक पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित है। अक्सर भारतीय ज्ञान परम्परा के इस विशाल भंडार को हाशिए पर रखती हुई नजर आती है, जिसके परिणामस्वरूप छात्र अपनी जड़ों से अलग होते जा रहे हैं तथा ज्ञान के एक सीमित परिप्रेक्ष्य में ही बंधे रह जाते हैं। ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस असंतुलन को दूर करने तथा भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा की मुख्य धारा में लाने का प्रयास करती है। इसका उद्देश्य छात्रों को न केवल आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से परिचित कराना है, बल्कि उन्हें अपनी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत से अवगत करवाने में सक्षम बनाना है।

“भारतीय ज्ञान परम्परा” का समावेश शिक्षा को अधिक समग्र, प्रासंगिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने की क्षमता रखता है। यह छात्रों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, समस्या-समाधान कौशल और नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।” (2)

भारतीय ज्ञान परम्परा से परिचित होकर छात्र अपने राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक गौरव की भावना को मजबूत कर सकते हैं, जिससे एक आत्मनिर्भर और जागरूक समाज का निर्माण होगा।

भारतीय ज्ञान प्रणाली की विशेषताएँ

(1) भारतीय ज्ञान परम्परा आध्यात्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और कलात्मक ज्ञान की एक विस्तृत शृंखला है, जो भारतीय संस्कृति की सांस्कृतिक पहचान और बौद्धिक स्तर को समृद्ध करती है।

(2) भारतीय ज्ञान परम्परा भारतीय भाषाओं, कला तथा संस्कृति को बढ़ावा देने पर विशेष रूप से जोर देता है।

(3) भारतीय ज्ञान परम्परा में जन-जातीय ज्ञान के साथ-साथ स्वदेशी शिक्षण पद्धतियों में गणित, दर्शन, योग, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, कृषि, साहित्य, राज्य-विज्ञान, खेल के साथ-साथ अन्य अनेक विषय सम्मिलित हैं।

(4) भारतीय ज्ञान प्रणाली में शिक्षा या ज्ञान का मुख्य उद्देश्य सत्य की खोज, अर्थात् ज्ञान की खोज करना है।

(5) भारतीय ज्ञान परम्परा न केवल भारत के लिए, बल्कि विश्व के लिए अमूल्य धरोहर है।

(6) भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अतीत की विरासत ही नहीं, बल्कि भविष्य का भी मार्गदर्शन करती है।

(7) भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, धर्म और कर्म, योग और त्याग का अद्भुत समन्वय है।

(8) भारतीय ज्ञान परम्परा भारत को उसकी जड़ों से जोड़ते हुए उसे आधुनिक विज्ञान के साथ-साथ उसे विश्वगुरु के रूप में उभरने में एक नई दिशा देने में सहायक सिद्ध होगी।

नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता एवं महत्व

भारतीय ज्ञान परम्परा जो सदियों से हमारी संस्कृति और सभ्यता की आत्मा है, इसका समावेश न केवल शिक्षा को अधिक समग्र और सार्थक बनाएगा, बल्कि छात्रों को अपनी पहचान, मूल्यों और ज्ञान के प्रति एक गहरी समझ विकसित कर पाएगा। भारतीय ज्ञान सदियों से चला आ रहा है, जिसमें वेदों का बड़ा योगदान रहा है। वेद भारतीय सभ्यता के सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं, जिसमें ज्ञान के कई आयामों का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में प्राकृतिक विज्ञान, चिकित्सा और गणित के सिद्धान्तों का वर्णन मिलता है। उपनिषद, जो वेदों के ही हिस्सा हैं, भारतीय ज्ञान दर्शन का केन्द्र बिन्दु माने जाते हैं।

1. समग्र और संतुलित शिक्षा

आधुनिक शिक्षा प्रणाली अक्सर ज्ञान के कुछ विशिष्ट क्षेत्रों (विशेष रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी) पर आध्यात्मिक ध्यान केन्द्रित करती है, जबकि मानवीय मूल्यों, कला, संस्कृति और दार्शनिक चिंतन जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को गौण मान लिया जाता है। भारतीय ज्ञान परम्परा ज्ञान के विविध आयामों को नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक को एकीकृत करती है।" (3)

2. सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव और राष्ट्रीय गौरव

भारतीय ज्ञान परम्परा एक सांस्कृतिक विरासत है जो हजारों वर्षों से निरंतर विकसित होती आई है। वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक यह परम्परा अनेक विचारकों, संतों, दार्शनिकों और वैज्ञानिकों की साधना का परिणाम है। यह केवल धार्मिक या आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामाजिक, गणितीय, वैज्ञानिक, कलात्मक आदि क्षेत्रों में भी योगदान देती रही है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण, नाट्यशास्त्र, आयुर्वेद और गणित जैसे क्षेत्रों में भी भारत का ज्ञान विश्व के लिए प्रेरणा रहा है। इस परम्परा की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। "भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश छात्रों को अपने सांस्कृतिक इतिहास, मूल्यों और उपलब्धियों के प्रति जागरूक करेगा। यह उन्हें अपनी पहचान पर गर्व करने और राष्ट्रीय गौरव की भावना को मजबूत करने में सहायक होगा।" (4)

(3) ज्ञान और धर्म का समन्वय

भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान और विज्ञान, धर्म और कर्म, योग और त्याग का समन्वय मिलता है। "यहाँ जीवन को एक अखण्ड यात्रा के रूप में देखा गया है, जिसमें व्यक्ति को न केवल भौतिक सुखों की पूर्ति होती है, बल्कि आत्मा की उन्नति और मोक्ष की ओर भी अग्रसर होना है। गीता में अर्जुन को कर्म करने की प्रेरणा दी जाती है, जबकि उपनिषदों में ज्ञान को मोक्ष का साधन बताया गया है। इसी प्रकार आयुर्वेद भौतिक स्वास्थ्य की बात करता है, तो योग आध्यात्मिक स्वास्थ्य की।" (5)

नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश छात्रों को ज्ञान और कर्म से परिचित कराएगा, जिससे उनकी आलोचनात्मक सोच एवं रचनात्मक कौशल का विकास होगा।

(4) नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण में योगदान

भारतीय ज्ञान परम्परा में नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण पर अत्यधिक बल दिया जाता है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत जैसे ग्रन्थों में सत्य, अहिंसा, त्याग, करुणा और कर्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है। आधुनिक शिक्षा में इन मूल्यों का समावेश छात्रों के चरित्र निर्माण और उनके नैतिक विकास के लिए बहुत आवश्यक है। इसलिए नई शिक्षा नीति में भी भारतीय ज्ञान परम्परा के तहत इन मूल्यों को जोड़ा गया है।

(5) समकालीन चुनौतियों का समाधान

भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, सामाजिक न्याय जैसे विषयों पर गहन विचार किया गया है। आधुनिक विश्व जलवायु के परिवर्तन, प्रदूषण, तनाव और बढ़ती सामाजिक असमानता जैसी अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित सिद्धान्तों और मूल्यों को अपनाकर इन समकालीन चुनौतियों का समाधान खोजने में मदद मिल सकती है।

(6) योग और आत्मकल्याण

“भारतीय ज्ञान परम्परा में योग केवल शरीर की कसरत या व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मा, मन और शरीर के समग्र संतुलन की वैज्ञानिक पद्धति है। योग का मूल उद्देश्य केवल स्वास्थ्य लाभ नहीं, बल्कि आत्मकल्याण और आत्मसाक्षात्कार है।” (6)

यह परम्परा भारत में हजारों वर्षों से चली आ रही है। इसका वर्णन पतंजलि के योगसूत्र में भी दिया गया है। योग मनुष्य की मानसिक अशांति और उसकी आन्तरिक समस्याओं से लड़ने का एक मजबूत हथियार है, जिसके द्वारा हमारा शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। योग ने व्यक्ति को आत्मसंयम, अनुशासन और सहिष्णुता सिखाई। यह जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन और समरसता लाने की पद्धति रही है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि भारतीय समाज की आध्यात्मिक, मानसिक और नैतिक आवश्यकताओं से उपजी ज्ञान परम्परा है, जिसे पुनः जीवन का हिस्सा बनाने में नई शिक्षा नीति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

समावेश के अन्य क्षेत्र

भारतीय ज्ञान परम्परा को नई शिक्षा नीति के विभिन्न क्षेत्रों और विषयों में सफलतापूर्वक शामिल किया जा सकता है।

(1) गणित एवं विज्ञान

“प्राचीन भारतीय गणितज्ञों और खगोलविदों के योगदान, जैसे शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली, त्रिकोणमिति और ज्योतिषीय गणनाओं को आधुनिक पाठ्यक्रम में उचित रूप से शामिल किया जा सकता है।” (7)

(2) भाषा एवं साहित्य

“संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं (जैसे तमिल, हिन्दी, बांग्ला) के समृद्ध साहित्य, जिनमें ज्ञान, दर्शन, कविता और कहानियाँ निहित हैं, छात्रों की भाषाई कौशल और सांस्कृतिक समझ विकसित करने में मदद कर सकते हैं।” (8)

(3) संगीत और नाट्य परम्पराएँ

शास्त्रीय संगीत की राग, ताल, लय और विभिन्न प्रकार के लोकगीत भारतीय संगीत की समृद्धि को दर्शाते हैं। संस्कृत नाटकों और लोक नाट्य रूपों का अध्ययन भारतीय रंगमंच की परम्परा को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

(4) स्वास्थ्य एवं कल्याण

आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों के सिद्धान्तों और लाभों को स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है। शारीरिक आसन, प्राणायाम, ध्यान मन और शरीर के बीच संतुलन बनाने का कार्य करते हैं। मिट्टी, पानी, सूर्य और अन्य प्राकृतिक तत्वों का उपयोग करके अनेक बीमारियों का इलाज किया जा सकता है।

आधुनिक स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में इन प्रणालियों को शामिल किया जा सकता है। छात्रों को सरल योगासन और ध्यान का अभ्यास करवाकर उनकी स्वस्थ जीवन शैली को विकसित किया जा सकता है।

(5) व्यावसायिक शिक्षा

“पारम्परिक भारतीय शिल्प, कृषि पद्धतियों और स्वदेशी तकनीकों का ज्ञान छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। पारम्परिक भारतीय शिल्प और तकनीकी ज्ञान और कौशल का खजाना है।” (9)

आधुनिक व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में इन पारम्परिक कौशलों का परिचय दिया जा सकता है। छात्रों को स्थानीय कारीगरों और किसानों के साथ इंटरनशिप करने या कार्यशालाओं में भाग लेने का अवसर मिल सकता है, जिससे छात्रों को व्यावसायिक कौशल का निर्माण होगा, जो कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था और आधुनिक समय की माँग भी है। नई शिक्षा नीति के माध्यम से छात्र अनेक क्षेत्रों में इंटरनशिप के माध्यम से अपनी व्यावसायिक दक्षताओं को प्रभावशाली बना सकेंगे।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेश में चुनौतियाँ

भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित करने के मार्ग में कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जिन पर ध्यान केन्द्रित करना अति आवश्यक है, ताकि नई शिक्षा नीति 2020 के इस लक्ष्य को प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सके रूढ़

(1) पाठ्यक्रम का विकास

आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं और भारतीय ज्ञान परम्परा के विशाल और विविध तत्वों को संतुलित करते हुए एक व्यापक और सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम विकसित करना एक अत्यन्त कठिन कार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह उल्लेख किया गया है कि “सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को भारतीय जड़ों और परम्पराओं में निहित किया जाएगा।” (10)

हालाँकि इस विस्तृत और व्यापक दृष्टिकोण को क्रियान्वित करने योग्य पाठ्यक्रम में बदलाव करना एक चुनौती है।

(2) शिक्षकों का प्रशिक्षण

शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना और उन्हें प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। शिक्षकों को नई शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान प्रणालियों के शैक्षिक मूल्य को समझना अति आवश्यक है। इसके लिए शिक्षकों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि वे छात्रों तक इसे रोचक और आकर्षक तरीके से समझाने के लिय शिक्षण विधियों का प्रयोग कर सकें। इसमें कहानी कहने चर्चाएँ और अनुभवात्मक शिक्षण जैसी तकनीकों का उपयोग शामिल हो सकता है।

(3) शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता

भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बन्धित प्रामाणिक, सुलभ, शिक्षण सामग्री और संसाधनों का विकास एक महत्वपूर्ण चुनौती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में “उच्च गुणवत्ता वाली पाठ्यपुस्तकों” और शिक्षण सामग्री के विकास पर जोर दिया गया है।” (11)

विद्यालयों के लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि यह सामग्री तथ्यात्मक रूप से सही हो, आधुनिक शैक्षणिक सिद्धान्तों के अनुरूप हो तथा सभी भाषाओं में उपलब्ध हो। विभिन्न प्रकार के डिजिटल संसाधनों को विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि छात्रों के लिए संसाधनों को सुलभ और आकर्षक बनाया जा सके।

(4) वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ सामंजस्य

आधुनिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान परम्परा के बीच सामंजस्य स्थापित करना आवश्यक है, ताकि अन्धविश्वास और अवैज्ञानिक मान्यताओं से बचा जा सके। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि ज्ञान का समावेश वैज्ञानिक सोच को कमजोर न कर सके।

(5) मूल्यांकन के तरीके

भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेश के बाद छात्रों के ज्ञान और समझ का मूल्यांकन करने के लिए उपयुक्त मूल्यांकन विधियों का विकास करना अपने आप में ही एक बड़ी चुनौती होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में रचनात्मक मूल्यांकन और छात्रों के समग्र विकास पर जोर दिया गया है। आधुनिक शिक्षा में मूल्यांकन विधियों में परियोजना-आधारित कार्य, समूह चर्चाएँ, प्रस्तुतियाँ और पोर्टफोलियो जैसे व्यापक दृष्टिकोण शामिल हो सकते हैं।

(6) शोध संस्थानों और विश्वविद्यालयों की भूमिका

शोध संस्थानों और विश्वविद्यालयों को भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन और प्रचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। इन्हें अनुसंधान को बढ़ावा देना होगा, जो आधुनिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान प्रणालियों के बीच सेतु का कार्य करें।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेश की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखने में मदद करेगा, अपितु छात्रों को समग्र और मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करेगा। नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य प्रारम्भिक बाल्यावस्था से ही विद्यार्थियों की देखभाल करना, शिक्षा संरचना में और अधिक सुधार करना, शिक्षण-प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावशाली बनाते हुए परीक्षा प्रणाली में सुधार करना एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित ज्ञान को नवीन पाठ्यक्रमों में लाना है। इसके लिए यह शिक्षा के 5334 प्रारूप को अपनाते हुए विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों के विकास को महत्वपूर्ण मानती है। चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करते हुए, यदि हम भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा के साथ सफलतापूर्वक एकीकृत कर पाते हैं, तो यह भारत को शिक्षा के क्षेत्र में एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा और "आत्मनिर्भर भारत" तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्" के दर्शन को साकार करने में सहायक होगा।

संक्षेप में, भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शामिल करने की अपार संभावनाएं हैं, जिससे छात्रों का समग्र विकास संभव है।

संदर्भ

- (1) अग्रवाल, 2006, भारतीय ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की विरासत, पृ. 35.
- (2) अजित कुमार राव एवं प्रशांत कुमार, आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश, लेख, पृ. 149।
- (3) एस. एन. राम, 2002, भारतीय संस्कृति और सभ्यता, पृ. 65।
- (4) एस. एन. राम, 2002, भारतीय संस्कृति और सभ्यता, पृ. 110।
- (5) भारतीय ज्ञान परम्परा, लक्ष्मी पब्लिशिंग हाउस, पृ. 5।
- (6) भारतीय ज्ञान परम्परा, लक्ष्मी पब्लिशिंग हाउस, पृ. 9।
- (7) डी. पी. अग्रवाल, 2006, भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की विरासत, पृ. 60।
- (8) एस. एन. राम, 2002, भारतीय संस्कृति और सभ्यता, आत्माराम यूनिवर्सिटी, पृ. 112।
- (9) डी. पी. अग्रवाल, 2006, भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की विरासत, पृ. 120।
- (10) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, भारत सरकार, खंड पृ. 4.2।
- (11) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारत सरकार, 2020, खंड पृ. 4.36।